जन विकल्प कविता पुस्तिका

यवन की परी

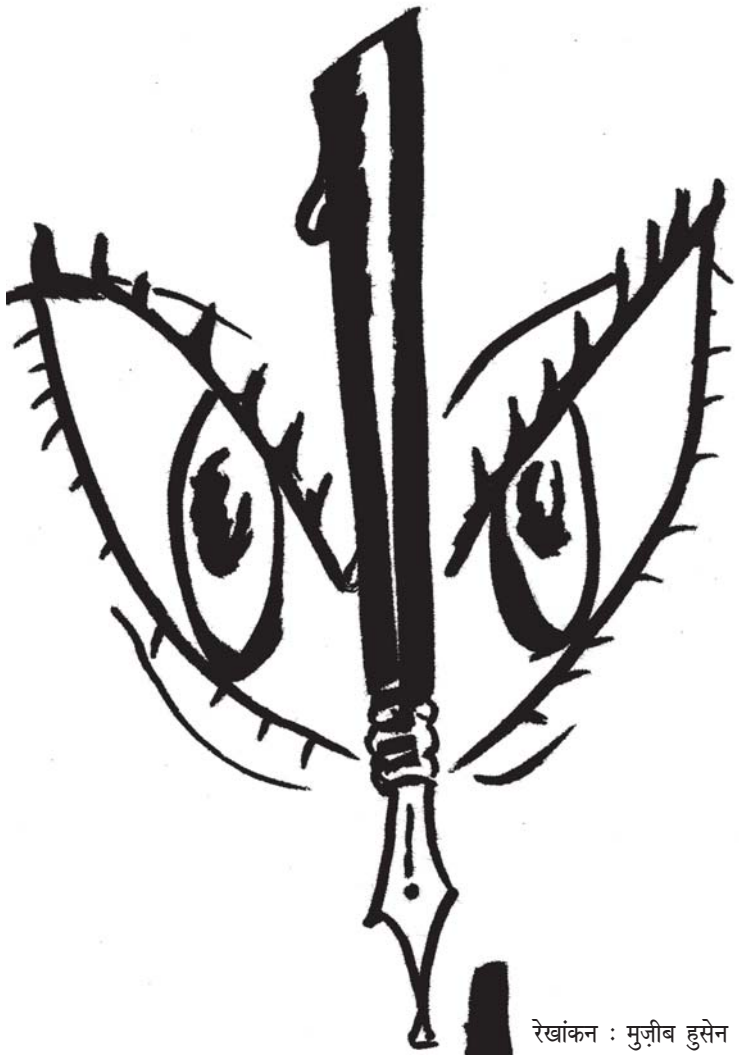

रेखांकन : मुज़ीब हुसेन

एक पत्र पागलखाने से – पृष्ठ 3, उन्हें नफरत है खिड़कियों से – पृष्ठ 2
रति सक्सेना की कविता 'परी की मजार पर' – पृष्ठ 17.

जन विकल्प
सामाजिक चेतना की वैचारिकी
ekfld if=dk

पुस्तिका 'यवन की परी' उद्घाटन अंक जनवरी, 2007 के साथ निःशुल्क वितरित।

एक अंक–10रु
वार्षिक–100रु
तीन वर्ष–250रु
मानद सदस्यता– 2,000रु
संस्था और पुस्तकालय (वार्षिक)–200रु
संस्था और पुस्तकालय (तीन वर्ष)–500रु
चैक/ड्राफ्ट 'जन विकल्प' के नाम से पटना में देय। पटना से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 35/–रु अतिरिक्त जोड़ें।

संपादक
प्रेमकुमार मणि
प्रमोद रंजन

जन विकल्प
vikalpmonthly@gmail.com
शिक्षक कॉलोनी, कुम्हरार
पटना-**800026**
फोन : 0612–2360369, 2582573.

जन विकल्प की सामग्री इंटरनेट पर देखें :
vikalpmonthly.blogspot.com

उन्हें नफरत है खिड़कियों से

पेरिया परसिया, सेतारह या पेरि अथवा हिंदी में पुकारू नाम परी कहें, नाम कुछ भी हो, कहानी एक ही है। इंटरनेट पर एक संवाद आरंभ हुआ, संवाद करने वाली ने अपना नाम सेतारह बताया, जो शायद परशियन भाषा का नाम है। ई मेल के रूप में सवांद का आरंभ मेरी वेब पत्रिका की प्रशंसा से हुआ लेकिन कुछ दिनों बाद एक बेहद घबराया सा पत्र मिला, पत्र लेखिका ने अपनी एक मित्र के बारे में लिखा, जिसने अभी-अभी पागलखाने में आत्महत्या कर ली। उनका कसूर यह था कि उन्होंने एक ऐसे कवि से मुहब्बत की थी जिससे वे कभी मिलीं नहीं थीं। पत्र लेखिका ने बताया कि मरने से पहले उसकी मित्र ने पागलखाने की एक नर्स को कुछ पत्र दिए थे...जो कविता से लगते हैं।...ई मेल की सबसे बड़ी दुविधा यह होती है कि हम ना तो पत्र लिखने वाले के बारे में जान पाते हैं और ना ही यह पता लगा पाते हैं कि यह किस देश का है (विशेष रूप से यदि पत्र याहू से आया हो)। लेकिन उक्त पत्र लेखिका से संवाद आरंभ होते ही मुझे यह अनुमान हो गया कि वह यवन देशों के किसी ऐसे समाज से ताल्लूक रखती है जहां औरतों के आजादी की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। बाद में इस बात की पुष्टि भी हुई। उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैं उन पत्रों को अपनी वेब पत्रिका

(शेष पृष्ठ : 16 पर)

एक पग पागलखाने से

–परी

1.

वे कहते हैं कि
वे हाथ बांध देंगे मेरे
पलंग के सिरहाने से
यदि मैंने दीवारों पर
सिर पटका

उन्हें प्यार है दीवारों से

मैं बन्द हूं पांच दीवारों वाले एक सफेद ठंडे कमरे में
जहां कोई खिड़की नहीं
हवा के लिए

उन्हें नफरत है खिड़कियों से

मैं अकेली पत्ती, पितलाई हरी
पत्तियों की तरह, मुझे दरकार होती है
ताजी हवा की, यदि विश्वास नहीं उन्हें
मेरे क्लोरोफिल पर तो
इतना याद रखें कि
एक पागल औरत को भी जरूरत है
हवा की, जो उसके बालों को सहला दे

वे परागकणों से युक्त हवा को प्रदूषित कहते हैं

कमरे की पांचवी दीवार मेरी छत है
यह दीवार सरकाई जा सकती है
इसका बोझ मेरे कंधों पर टिका है
जिससे मेरे दिल और इसकी दूरी
हर क्षण कम होती जा रही है
यह हर क्षण नीचे झुकती जा रही है
किन्तु कभी ढहती नहीं

वे खुद चमकदार आसमान के नीचे रहते हैं

वे कहते हैं कि मुझे एक सिगरेट देंगे
यदि मैं कसम खाऊं कि मैं अच्छी बच्ची बनूंगी
पलंग के नीचे घुस कर अपनी नसें नहीं चबाऊंगी
लेकिन वे एक ट्रे लेकर आते हैं, शॉक थेरोपी से पहले, हर बार

वे मुझे मार डालने के आदी हो गए हैं

उन्होंने मेरे दिमाग से संगीत मिटा दिया
उन्होंने मेरी देह से नृत्य मिटा दिया
लेकिन वे दिल से नहीं मिटा पाए
तुम्हारे प्यार को, तुम्हारी यादों को, मेरी चाहत को
तुम्हारी कविताओं को अपनी जबान में तर्जुमा करने को

वे मुझे मार डालने के आदी हो गए हैं

2.

मुझे नहीं चाहिए सिगरेट

नहीं चाहिए सूरज की रोशनी
नहीं चाहिए मुझे आजादी
बस कह दो उन्हें कि
दे दें मुझे कागज और कलम
जिससे मैं बात कर सकूं अपने आप से

यहां सारे के सारे डाक्टरों और नर्सों के सिर गायब हैं

मैं कभी नहीं मांगूगी उनसे चाभी
जिससे इस दरवाजे को बन्द कर
महसूस कर सकूं आजादी अकेलेपन की

कभी भी नहीं मांगूगी उनसे धर्मग्रन्थ
पापों के प्रायश्चित के लिए
जिससे महसूस कर सकें वे अपने को मजबूत

ईश्वर भी उतना अकेला नहीं होगा आसमान में
जितना एक पागल औरत है अकेली
इस कमरे में जो बन्द नहीं होता

कह दो उनसे कि वे दे दें मुझे बस एक कागज और कलम
जिससे मैं बुन सकूं एक खूबसूरत प्रेम कविता
मेरे प्यार की आत्मा के लिए, सर्दियां करीब आ रहीं हैं

सर्दियां करीब आ रहीं हैं

3.

ये दीवारें इतनी खाली क्यों हैं?
न कोई दर्पण, ना चित्र, ना ही धब्बे
बच्चों के हाथों के निशान तक नहीं

केवल डरावनी सफेदी

केवल डरावनी सफेदी

दीवार घड़ी कहां छिपी है?
मेरे सीने में? मेरी बिल्ली कहां है?
कहां है मेरा वैक्यूम क्लीनर?
कहां हैं बिना धुले कपड़ों और जूठे बर्तनों का ढेर?

यह डरावनी सफेदी
क्या यह इत्तिला है दुनिया के अन्त की?
यहां हर दिन बीता हुआ कल है
कोई आने वाला कल नहीं, दर्पण नहीं, घड़ी की सुइयां नहीं
बस दीवार पर मंडराती एक औरत की परछाई

मरी मोमबत्ती की तरह

कोई है इस दुनिया में जो
मरी मोमबत्ती को याद रखता हो?

4.

आराम के लिए वक्त नहीं है
यहां तक कि पागल औरत के लिए भी

आधी रात को
एक बिना सिर वाला आदमी
सफेद चोगे में
आता है कमरे में
बोलता है सफेद आवाज में :
'तुम अभी भी खूबसूरत हो'

मेरे इंकार करने पर कहता है :
'मै तुम्हारा पति हूं'

वह झूठ बोल रहा है, मैं जानती हूं
लेकिन वह मेरे पति जैसा लगता जरूर है
वह शुरू होता है बिना चुम्बन के
बिल्कुल मेरे पति जैसा ही
उसे अन्तर मालूम नहीं है
प्यार और यौन सम्बन्ध में

शॉक थेरोपी इससे बेहतर है
शॉक थेरोपी इससे बेहतर है
शॉक थेरोपी इससे बेहतर है
शॉक थेरोपी इससे बेहतर है
शॉक थेरोपी इससे बेहतर है

सुबह वह फिर आता है
खूबसूरत जवान नर्स के साथ
'हमारे बच्चे कैसे हैं' मैं पूछती हूं
वह अपने बालों वाले हाथ हिला हिला कर हंसता है, हंसते हुए कहता है
'मुझे नहीं मालूम, मैं तुम्हारा पति नहीं हूं', फिर पूछता है :
'आज कैसा लग रहा है, कल रात कोई बुरा सपना तो नहीं देखा?'

5.

क्यों हूं मैं यहां?

क्योंकि मैंने एक आदमी से प्यार किया
जिससे मैं कभी मिली तक नहीं?

क्योंकि मेरे और प्यार के बीच ऐसा कोई पुल नहीं

जो दिखाई दे, सिवाय कविता के?

क्या इसलिए कि मैं पक्की व्यभिचारिणी हूं
स्वप्न युक्त सपनों को बुनती हुई?

कोई भी विश्वास नहीं करता मुझ पर
सिवाय इस गुलाबी गोली के

जो उनके कानून और धर्म के अनुरूप
मेरे दिल की क्रूर धड़कनों को वश में रखती है

मैं यहां क्यों हूं?

मेरी आंखों में आंसू का एक कतरा भी नहीं?
सिवाय भूतों के कोई मुझसे मिलने आता भी नहीं

क्यों नहीं मुझे लोगों से मिलने दिया जाता?
अपने परिवार से, बच्चों से?

'कोई अपनी बेटी से शादी नहीं करेगा
क्योंकि उसकी मां पागलखाने में है'
मेरे पति ने कहा था गुस्से में, जब वह
आखिरी बार मिलने आया था

उम्दा लफ्ज, उम्दा काम, उम्दा सोच

तभी तो मैंने अपने पति को मार डालने के लिए वार किया
किसी और के लिए नहीं, सिर्फ खुदा के लिए

6.

अब मैं किससे अपना अकेलापन बाटूंगी
यह चींटी भी मर गई?

नर्स गुस्सा कर रही है
'शर्म आनी चाहिए तुम्हें!
तुम एक चींटी के मरने पर रो रही हो
जबकि पूरी दुनिया में लाखों करोड़ों निरपराध
मारे जा रहे हैं, बमबारी की बरसात में'

मैं दूसरों के बारे में सोचने की कोशिश कर कर के थक गई
वे मर गए हैं
बस मेरे अकेलेपन को तकलीफ देने के लिए
वे वास्तव में हैं या फिर
मर गए वास्तव में?

मैं अब इस वास्तव पर विश्वास नहीं करती
यहां तक कि जंग में मेरे अपने बेटे की मौत की बात पर भी नहीं
मुझे तो यह बात कतई झूठ लगती है
बम क्या खाक बच्चों को मारेंगे
वे तो दुश्मनों के लिए बने हैं

मैं इस वक्त बस मरी चींटी के बारे में सोच रही हूं
सारे मीडिया वाले इस बात पर खामोश हैं
यह चींटी अमेरिका की प्रेसीडेंट जो नहीं थी
न ही कोई धार्मिक गुरू
दुनिया की आखिरी चींटी भी नहीं
उसकी जिंदगी और मौत कोई खास मायने नहीं रखती
यहां तक कि कविता पत्रिका का चीफ एडिटर
जो सताई गई औरतों की कविता छापता है

उसके लिए भी यह केवल एक चींटी थी, और कुछ नहीं
उसे तो नर्स के कदमों में कुचल कर मरना ही था

अब जब नर्स चली गई तो मैं अपने आप से पूछ रही हूं
इस चींटी की मौत के लिए यह पागलखाना ही क्यों चुना गया
क्या खुदा कोई संदेश दे रहा है?

दवाईयों की गोलियों और शीशी की जगह
यदि वे मुझे एक गमला दे दें
मैं उसमें चीटी की मरी देह को दफना दूंगी
तो उसका रहस्य लाल पंखुड़ियों में खिल उठेगा

7.

मैंने भूल के गिद्ध के सामने अपना दिल खोल दिया
जिससे वह खा ले तुम्हारी यादें, और बैठ जाए तुम्हारी जगह
लेकिन तुम बच गए

मैंने पागलपन के अथाह रेगिस्तान में पनाह ली
जिससे एक दुनिया मिले जहां तुम नहीं हो
लेकिन पहले से ज्यादा चालाक शब्दों ने, मेरे दिमाग में पनाह ले ली
यह याद दिलाने के लिए, यह स्वीकार करने के लिए
तुम्हारे सिवाय, और कोई भी जगह नहीं ले सकता है
मेरे दिमाग में, मन में
वे लगातार मेरे लिए दवा और गोलियां ला रहे हैं
इस ठंडे सफेद कमरे में
जहां मैं दुनिया की आखिरी चील की मानिंद रह रही हूं
यह याद रखते हुए की खो गया है मेरे प्यार का आसमान

8.

मेरी मां किसी और मर्द के बारे में क्यों नहीं सोचा करती थी

अपने शौहर के साथ सोते वक्त
या आलू छीलते वक्त?

मेरी सोच हरदम देह को धोखा देती रही

क्यों मेरी मां के लिए पागलखाना बस
पागलों के रहने की जगह है? क्यों मैं अपने अनन्त सवालों को
भूल जाती हूं, ज्यों ही अपनी ओर आते देखती हूं सिरकटी देहों को

9.

पागलखाने के इस कमरे की सफेदी और ठंडक
गवाह है, प्रिय! कि मैंने तुमसे कुछ नहीं चाहा
न धन दौलत, न अंगूठी, यहां तक कि कबूतर की परछाई तक नहीं
मेरी एक मात्र इच्छा थी कि तुम्हें सुन सकूं
मेरी आंखे चाहती थीं तुम्हें देखना
'झूठी और धोखेबाज' तुमने कहा, और छोड़ कर चले गए
सफेदी और ठंडापन जो इस कमरे में छाया है
साफ-साफ बयान करता है कि मैं झूठ बोल ही नहीं सकती
हलांकि कोई मेरे होठों से सच सुनना पसन्द करता ही नहीं है
सच जिससे मैं नफरत करती हूं वह है 'मौत'

10.

जब मैं तुम्हारे प्यार में पड़ी तब
मेरे पास एक अच्छा शौहर था, जिसने मेरे लिए
चार कमरों का बंगला बनवा रखा था

जब मैं तुम्हारे प्यार में पड़ी तो
मेरे पास एक बेटा था, गबरू जवान
और एक प्यारी खूबसूरत बेटी

जब मैं तुम्हारे प्यार में पड़ी तो
मुझे कुछ नहीं चाहिए था
अलावा एक आत्मा के, मेरी देह के लिए

तुमने मेरे दिल को अपने प्यार भरे गीतों से भर दिया
तुमने जता दिया कि : 'बस मुझे मानो
मैं ही प्यार का आखिरी मसीहा हूं इस दुनिया में'

तुमने मेरे खाबिन्द को लिखा
उसे धमकाया 'उसे आजाद कर दो! ओ नीच आदमी!'

प्यार के उस विशाल आसमान में
जब मैं तुमहारी बाहों में बंधी, कल्पना में ही
आंखे बन्द किए, बिना परों के उड़ रही थी

तुमने शासित किया : खुदा को चुन, बस खुदा को
मैंने अपनी बीबी से वायदा किया है कि तुम्हें खत नहीं लिखूंगा!
मैं अब से अपने बेटे के लिए अच्छा पिता बनूंगा!

तुम्हारे प्यार में पड़ने से पहले
सभी घड़ियों की दो सूइयां हुआ करती थीं
और पागलखाना मेरा घर नहीं हुआ करता था

11.

खुदा!
तूने दूसरों के लिए जिन्दगी बनाई
मेरे भाग्य में कविता बदी थी
और अकेलापन
और पागलपन

दूसरों के पास चार मौसम हैं
और दो पांव चलने के लिए
जबकि दुनिया मेरे बर्फीले पंखों पर टिकी है
अपनी खंदकों, यतीमखानों और मरघटों के साथ

दूसरों को तो बस मौत के दिन मरना पड़ता है
लेकिन मैं जिंदगी के हर रोज मर रही हूं

मैं जब नौ बरस की रही हूंगी
दिव्य दृष्टि के लिए चुनी गई थी
लेकिन किसी ने विश्वास नहीं किया
सिवाय बेकार के लफ्जों के

इन्ही लफ्जों ने मुझे मसीहा बना दिया
बिना खुदा के, बिना बन्दों के
अपने पंखों से छूट कर असली दुनिया के
पिंजरे में दुबारा आने के लिए

क्यूपिड की तरह, जिसने अपने पैरों के लिए
जूतों को पंखों से बदल लिया

12.

मेरे बिस्तर तक, मेरे दिल तक
पानी चला आ रहा है
पांचवी दीवार तक
किसी को आश्चर्य तक नहीं
ऐसा लगता है कि सारे के सारे डाक्टर और नर्सें
जन्मजात मछलियां और सीप घोंघें हैं

और कोई नहीं तो पानी ही
पागल औरत के बाल सहला देता है
और कोई नहीं, बस पानी ही
पोछ देता है आंसूओं को, पगली औरत के

कहां है मेरा प्यार?
कहां हो तुम?
अब तुम चले ही गए तो
मैं नहीं चाहती हूं कि वापिस लौटो
मुझे बचाने के लिए
बस मेरे हाथ छोड़ दो
और समाने दो मुझे समंदर की तलहटी में
वहां, मुझे जरूर मिलेगा एक मरा हुआ शार्क
तुम्हारे दिल की गंध लिए, स्याह
हर बार जब मैं उसके बंद होंठों को चूमूंगी तो
मुझे लफ़्ज ब लफ़्ज तुम्हारी प्रेम कविताओं का स्वाद मिलेगा

13.

तुम्हारी आंखों में
मैं केवल एक औरत हूं, बस एक औरत
एक दिन तुमने प्यार किया बस 'उससे'
दूसरे दिन तुम भुला बैठे उसको

तुमने मेरे भीतर छिपे कवि को नहीं देखा
जो तुम्हारी कविताओं को पाने की आदी हो गई थी, हर दिन
तुमने मेरे भीतर की चिड़िया को भी नहीं देखा
जो आदी हो गई थी तुम्हारे स्नेह की, हर दिन

तभी तो धूल के बादलों की तरह
तुम्हारे लफ़्ज आसमान में टंगे रहे

'मैं तुम्हे दूंगा प्यार और आजादी और आदर
जबकि दूसरे आदमी चाहते हैं बस तुम्हारी देह, और सेवा'

मेरी निगाहों में,
तुम आदमी थे, इंसान थे, कवि थे
मैंने तुमसे बांटा, अपना सोच, अपना पिंजरा और कविताएं
तभी तो तुम अभी तक जिंदा हो, किसी और औरत से मुहब्बत करने के लिए

जबकि मैं अभी तक तुम्हारी कविताएं
उतार रही हूं अपनी जबान में, अपने घर वापिस लौटने में असमर्थ
जहां मेरा शौहर और बच्चे इंतजार में हैं मेरी वापिसी के
जी रही हूं इस पागलखाने में

तुम अभी तक अपनी पत्रिका में मुख्य संपादक हो

डेथ सर्टीफिकेट

जब वह भुला बैठा उसे
वह याद नहीं रख पाई अपने को, और अधिक
इसीलिए अपनी बन्द पलकों पर एक नींद लिए
वह मर गई

नहीं, यह मत सोचना कि उसने आत्महत्या की
वह तो बस मर गई
जैसे कि एक फूल मरता है
बिना पानी के

उन्हें नफरत है खिड़कियों से..

'कृत्या' में जगह दूं, जिससे लोगों को इस बारे में पता लग सके। लेकिन उनका सबसे बड़ा आग्रह यह था कि ना तो पत्र लेखिका का असली नाम दिया जाएगा, ना ही कवि का, नहीं तो कवि के परिवार को खतरा हो सकता है। जब कविता मिली तो मुझे लगा यह एक पुकार है वही पुकार जो कभी हमारे देश में मीरा की थी, वही जो हब्बा खातून की थी, और ना जाने कितनी स्त्रियों की, जो अपने दिमाग का मर्दों की तरह इस्तेमाल करने लगती है, जो मर्दों के लिए निर्धारित सीमा रेखा के भीतर घुसने की कोशिश करती हैं। उस कथित विक्षिप्त (विद्रोही!) महिला की यह 'कविता' पुरूष सत्ता की क्रूरताओं का बखान करते हुए स्त्री विमर्श का नया पाठ रचती है। मुझे लगा कि हमारे देश में पाठकों को भी इस कविता को पढ़ना चाहिए.. इसलिए अंग्रेजी में मिली इन कविताओं का मैं हिंदी में अनुवाद करने लगी, और अनुवाद की प्रक्रिया में ही मेरे भीतर आक्रोश शक्ल लेने लगा। बस यहीं पर मेरी कविता प्रक्रिया भी शुरू हो गई। यहीं पर मेरा 'परी' से संवाद स्थापित हुआ।

परी का 'एक पत्र पागलखाने से' तथा मेरी कविता 'परी की मजार पर' वेब पत्रिका में प्रसारित होने के बाद कुछ साइबर पाठकों के पत्र आए जिसमें तरह-तरह की शंकाएं थीं जैसे कि यह कवयित्री मरी नहीं है या फिर कोई और है जो परी के नाम पर लिख रहा है। मैं बस एक बात जानती हूं कि यह कविता औरत की तकलीफ बयान करती है जो देह और मन के साथ दिमाग भी रखती है। कवयित्री का वास्तविक नाम चाहे जो हो।

❑ **रति सक्सेना**

मुज़ीब हुसेन

परी की मजार पर

-रति सक्सेना

1.

ओ अनजानी परी!
तुमने बस पांच दीवारें देखी
छठी नहीं देखी
जो तुम्हारे पैरों के ऐन नीचे है
ज्यादातर लोग अनदेखा कर देते हैं
लेकिन हमारे देश में एक स्त्री ने उसे भी भेद दिया था

जबकि उसके पति ने उसे
भेज दिया था पागलखाने में
जिसकी कोई दीवार ही नहीं थी,
इसलिए नहीं कि उसने किसी से प्यार किया
इसलिए भी नहीं कि उसने धोखा दिया
वह इंतजार करती रही उसके लिए चौदह बरस तक
फिर भी छोड़ा पति ने
बहुत सी चीजें ज्यादा अहमियत रखती हैं
आदमी के लिए, मसलन शासन, सिंहासन, जनता

परी! औरत के क्लोरोफिल को कोई नहीं जानता
यहां तक खुद औरत भी नहीं
औरत पीली होती हुई भी खुश रहती है
मुरझाते वक्त भी हंसती है

तुम्हारी छत तुम्हारे कंधों पर टिकी है
तमाम औरतें छतों के ऊपर होते हुए भी
न उड़ रही हैं, न तारे देख रही हैं

उन्होंने तुम्हारे दिल से संगीत को हटाया
देह से नृत्य को,
मेरे आजू-बाजू तमाम औरतें
आंख में पट्टी बांध, पांवों में जंजीरें लाद
हाथों में बेड़ियां पहन नाच रही हैं
खुद को खुश करने को नहीं,
बल्कि उन सब को जो उसकी देह को नाचते देख
मछली खाने का लुत्फ पाते हैं

2.

परी!

अच्छा किया जो तुमने चाभी नहीं मांगी
अच्छा किया जो दरवाजा नहीं खोला
तूफान तुम्हारे दरवाजे को भड़भड़ा कर लौट गया
सांप सपोले नाचते रहे
तुमने अपने सिर के ऊपर की दीवार को सरका
बस झांक लिया आसमान
पूरा का पूरा

हमारे देश में कागज कलम पूजे जाते हैं
लेकिन बस आदमियों के द्वारा
तुम पहली औरत हो
तुम आखिरी औरत हो
तुम अकेली औरत हो,
नहीं, रहने दो... मैं भी हूं तुम्हारे साथ
कागज कलम की चाहना रखने वाली

3.

क्या खोज रही हो तुम?
वही, जो मैं खोज रही हूं काफी दिनों से?
बर्तनों का ढेर चाहिए मुझे
जिससे मांज सकू मैं समाज की गर्द
चाहिए कपड़े, हटा सकूं जर्रा जर्रा मैल
मेरे भी जिगर में हैं
कुछ स्याह निशान मेरे बच्चों के हाथों के

लेकिन मालूम है, मेरे देश में
मुझे हक नहीं मेरे बच्चों पर
क्योंकि बेटियां जनी हैं मैंने

मोमबत्तियां मरती नहीं

मोमबत्तियां जलती हैं,
जलाई जाती हैं

4.

शॉक थेरोपी?
शॉक थेरोपी!
हां शॉक थेरोपी,
क्या कोई और भी शॉक थेरोपी है
तुम्हारी दुनिया में?

5.

तुम कहती हो कि तुमने प्यार किया
उससे जिससे कभी नहीं मिली तुम
अच्छा हुआ कि मिली नहीं
नहीं तो तुम सात जन्म तक
पागल होने की हद तक प्यार नहीं कर पातीं
प्यार एक खिलौना है आदमी के लिए
कभी कदार खेलने के लिए
प्यार पागलपन है औरत के लिए
आत्महत्या की हद तक

6.

ओ परी! मुझे भी दर्द है
तुम्हारी चींटी सहेली के मरने का
तुम समझ सकी उसकी भाषा
या फिर वह ही बोल लेती थी तुम्हारी?

चींटियों की कतार जा रही है
मसालों के डिब्बों पर, चीनी पर चावल पर
मेरे हाथ उठ नहीं पा रहे हैं चींटी मार पाउडर के लिए

मैं खोज रही हूं इस कतार में कौन सी चींटी तुम्हारी सहेली होगी!

किसी पागलखाने में
मेरे लिए
कमरा तो खाली नहीं किया जा रहा है?

जंग का एलान है,
आदमी मर रहे हैं, रेल में, बाजार में, उत्सवों में
घरों में,
मैं चींटी खोज रही हूं
मैं चींटी खोज रही हूं
जो मुझसे बतिया सके
मेरी सहेली बन सके

7.

भूलना बड़ा आसान है परी,
बस शुरू करो कि कहां से भूलना है
रोज याद करो कि क्या क्या भूलना है
लिस्ट बनाओ कि क्या नहीं भूलना है
भूलते भूलते तुम इतना भूल जाओगी कि
कुछ भी याद नहीं रहेगा तुम्हें
भूल के अलावा
देखो मुझे अच्छी तरह से याद है
वह सब, जो मुझे भूलना है
वह, जिसे भूलने की कोशिश

मैंने जी जान से की

8.

किसी मां का दिल भी खोलना परी
उसने भी सोचा होगा किसी और के लिए
उसने भी महसूसा होगा किसी अनजाने को
बस वह पागल नहीं थी तुम्हारी तरह
आलू छीलते छीलते यादों की छीलती रही
कसीदे बुनते बुनते बूटों में रंग भरती रही

यदि मां ने नहीं सोचा होता तो
तुम भी नहीं सोचती परी
किसी के लिए, किसी के भी लिए, परी!

मेरी मां अहिल्या थी
जो पत्थर बनी रही, एक ठोकर की चाह में

9.

तुमने नहीं चाहा, यह तुम्हारी गलती है
उसे यही तो डर था कि
तुमने क्यों नहीं चाहा
यदि तुम भी चाहती आम औरतों की तरह
अंगूठी, कंगन या परिधान
उसे विश्वास हो जाता कि तुम औरत हो
उसे विश्वास हो जाता कि वह मर्द है
फिर शॉक थेरोपी
फिर शॉक थेरोपी
इसका कोई अन्त नहीं

10.

परी घड़ी के कई सुइयां होती हैं,
दिखती है हमें केवल दो
उनमें भी एक बड़ी एक छोटी होती है
यह तुम पर निर्भर करता है कि तुम कौन सी चुनो

लेकिन वह तुम्हें चुने या नहीं, यह उसका काम है

तुमने प्यार किया, तभी तुम्हारे जिगर से
कमल खिला
उस कमल पर जब भौंरा मंडराएगा..
देखो हमारे देश के संस्कृत के कवि
कमल के साथ भौंरो के बारे में भी सोचा करते थे
तुम उसे भींच लेना अपनी पंखुड़ियों में
कभी मत करना आजाद

वह देखो कमल खिलने लगा

11.

तुमने अपने पंख काट डाले
लेकिन मैं तो सुनती रही हूं
अपने पिता से
चींटी की जब मौत आती है
तो उसके पर निकलते हैं
तुम बिना पर के ही मर गई
अरे नहीं,
शायद लोगों ने नहीं देखा
तुम तो चल कर गईं थी

क्यूपिड के जूतों में

12.

एक वक्त था, मैं सोचा करती थी तुम्हारी तरह
डरा करती थी पानी से, झरने से समन्दर से
एक दिन समंदर ने मेरे तलवों को चूमा
मुझे लगा कि उससे बड़ा प्रेमी कोई नहीं
मुझे लगा कि उससे पागल प्रेमी कहीं नहीं

समंदर में शार्क हैं तो नन्ही मछलियां भी
सीप, घोंघें भी, लहरों के सपने भी
तुम जब पहुंचो समंदर की तलहटी में
मेरी ओर से चुम्बन दे देना उसके अंगूठों पर
उन सब चुम्बनों के एवज में
जो वह देता रहा मुझे जिन्दगी भर

13.

कवि देखा है मैंने परी तुममें
कवि देखा है, तुम्हारी सहेली ने तुममें
कवि देख रहे हैं हम सभी तुममें परी
हम क्यों मरे उनके लिए, जो
नहीं जी सकते हमारे लिए..
तुम बुझ गई मोमबत्ती की तरह
तुम झड़ गई फूल की तरह
किन्तु तुम्हारी सुगन्ध
फैल रही है दुनिया में..